रधादिभ्यश्च ।

रध्, नश्, तृप्, दृप्, द्रुह्, मुह्, ष्णुह्, ष्णिह् एभ्यो वलाद्यार्धधातुकस्य वेट् स्यात्। नेशिथ।

रध् आदि आठ धातुओं के बाद वलादि आर्धधातुक का अवयव विकल्प से 'इट्' होता है। 'इट्' में टकार इत्संज्ञक है, अतः टित् होने के कारण 'आद्यन्तौ टकितौ' परिभाषा से यह वलादि आर्धधातुक का आद्यवयव बनता है। उदाहरण के लिए लिट् लकार के मध्यमपुरुष एकवचन में 'नश्' धातु से सिप्, पुनः उसके स्थान पर थल् तथा द्वित्व आदि होकर 'ननश् थ' रूप बनता है। यहाँ थल् प्रत्यय आर्धधातुक है और उसके आदि में वल्-थकार भी है। अतः 'नश्' के पश्चात् होने के कारण प्रकृत सूत्र से उसको 'इट्' होकर 'न नश् इ थ' रूप बनता है। तब 'थलि च सेटि' से एत्व और अभ्यास-लोप होकर 'नेशिथ' रूप सिद्ध होता है। इडागम के अभाव-पक्ष में 'न नश् थ' रूप बनने पर अग्रिम सूत्र प्रकृत होता है।

मस्जि-नशोर्झलि ।

नुम् स्यात्। ननंष्ठ। नेशिव-नेश्व, नेशिम-नेश्म। नशिता, नंष्टा। नशिष्यति, नङ्क्ष्यति। नश्यतु। अनश्यत्। नश्येत्। नश्यात्। अनशत्